८ पाण्डुरंग वामनकाणे: धर्मशास्त्र का इतिहास, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, भाग--४, पृष्ठ--३९८

९. डा० कृष्ण कुमार : (सम्पादित) केदारखण्ड भाग--१, प्राच्य विद्या अकादमी कनखल हरिद्वार, १९९३, पृष्ठ--१

१०. तारिणीश झा : (सम्पादित) 'मत्स्य पुराण', हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग इलाहाबाद, सन् १९८९, पृष्ठ-- १

११. द्वारिका प्रसाद सक्सेना, राजकिशोर सिंह . संस्कृत साहित्य का इतिहास, विनोद पुस्तक भण्डार, आगरा, १९९५, पृ०--७१

१२. तारिणीश झा : (सम्पादित) 'मत्स्य पुराण' हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग इलाहाबाद, सन् १९८९, पृष्ठ---२

१३. डा० कृष्ण कुमार : (सम्पादित) केदारखण्ड, भाग--१, प्राच्यविद्या अकादमी कनखल हरिद्वार, १९९३, पृष्ठ-- ८

१४. डा० कृष्ण कुमार :(सम्पादित), केदारखण्ड, भाग---१, प्राच्यविद्या अकादमी, कनखल, १९९३, पृष्ठ--९

१५. डा० कृष्ण कुमार : (सम्पादित) केदारखण्ड भाग--१, प्राच्यविद्या अकादमी कनखल हरिद्वार, १९९३ पृ. ९--१०

१६. डा० कृष्णकुमार : तैदव पृ--- ९

१७. केदारखण्ड : तैदव

१८ शिवराज सिंह रावत नि:संग : केदार हिमालय और पंच केदार, बिन्सर प्रकाशन देहरादून, २००६, पृष्ठ--७५

❑❑❑

36

उत्तराखण्ड में पर्यटन से प्रभावित पर्यावरण --सुधार की आवश्यकता

डा० सुनील पवाँर
एसोसिएट प्रोफेसर वाणिज्य विभाग,
एम० पी० जी० कॉलेज मसूरी, उत्तराखण्ड

सारांश

उत्तराखण्ड में पर्यटन की इतनी अपार सम्भावनाए है कि यह पर्यटन के मामले मे स्विटजरलैण्ड को भी पीछे छोड़ सकता है यहाँ का नैसर्गिक सौन्दर्य एवं प्रदूषण मुक्त वातावरण अनायास ही पर्यटकों का मन मोह लेता है, यहाँ के पर्यटन के बारे में कहा जाता है कि यह हर वर्ग के पर्यटकों के लिए उपयुक्त है। यदि धार्मिक पर्यटन को देखा जाये तो यहाँ न केवल भारत के चारधाम बल्कि साहसिक पर्यटन से जुड़े अनगिनत सुरक्षित एवं सुरम्य स्थल उपलब्ध है। यहाँ की सांस्कृतिक विरासत एवं नैसर्गिक सुन्दरता ही पर्यटकों की रूचि का केन्द्र है जो अपने आप में ही पर्यटकों को आकर्षित करने में सक्षम है किन्तु आवश्यकता यह है कि न केवल पर्यटन के विकास पर व्यय किया जाए वरन् पर्यावरण की सुरक्षा पर भी व्यय किया जाना चाहिए ताकि पर्यटन एवं पर्यावरण में असन्तुलित विकास होने से बचा जा सकें।

यहाँ का पर्यटन पर्यावरण पर आधारित है। यदि पर्यावरण का ध्यान न रखते हुए पर्यटन पर अत्यधिक निवेश किया जाता है तो पर्यावरण का विनाश निश्चित है और यदि पर्यावरण का विनाश होता है तो पर्यटन घटने के साथ ही इस उद्योग से जुड़े सभी क्षेत्रों में निवेश का डूबना निश्चित है। अतः उत्तराखण्ड की अर्थव्यवस्था में पर्यटन एवं पर्यावरण दोनों ही दृष्टि से अत्यन्त संवेदनशील है इनमें सन्तुलित विकास की प्रक्रिया का मॉडल अपनाकर ही इच्छित

परिणाम प्राप्त किये जा सकते है। यह तभी सम्भव है जब पर्यटन एवं पर्यावरण को एक समग्र लक्ष्य माने एवं दोनों में समाजस्य स्थापित करते हुए निवेश की योजनाओं का कियान्वयन किया जाय।

बहुधा कहा जाता है कि असीम नैसर्गिक सौन्दर्य के कारण उत्तराखण्ड में पर्यटन की कश्मीर से भी अधिक सम्भावनाऐं है क्योंकि उत्तराखण्ड को कालजयी प्राकृतिक सुन्दरता विरासत में मिली है। दूसरी ओर यह भी तथ्य है कि ये सम्भावनाएं निरपेक्ष नहीं है और यदि इन सम्भावनाओं को निरन्तर बनाये रखना है तो हमें सतत प्रयास करने होंगे। पर्यटन एवं पर्यावरण एक कारण—परिणाम की एक चक्रीय व्यवस्था है। पर्यावरण में सुधार होने से पर्यटन बढता है लेकिन पर्यटन बढने प्रदूषण एवं अपशिष्ट में भी वृद्धि होती है जो पुनः पर्यावरण को क्षति पहुँचाकर पर्यटन के स्तर को घटा सकता है। स्पष्टतः हमारा संकेत एक ऐसी व्यवस्था की ओर है जिसमे पर्यटन तो बढ़े लेकिन पर्यावरण प्रदूषित न हो।

भारतीय अर्थव्यवस्था में पर्यटन के महत्व को योजनाकारों ने प्रथम योजना में ही संज्ञान में ले लिया था। प्रथम योजना में ही दो तरह की पर्यटन योजनाएं निर्मित किये जाने पर विचार किया गया था प्रथमतः वे योजनाएं जो विदेशी पर्यटकों हेतु सुविधाएं उपलब्ध किये जाने हेतु तथा दूसरी स्वदेशी पर्यटन को विकसित करने हेतु। चतुर्थ योजना में पहली बार ये स्वीकार किया गया कि विदेशी पर्यटन भी विदेशी मुद्रा अर्जन का एक महत्वपूर्ण साधन है और विदेशी विनिमय को प्राप्त करने के लिये इस संसाधन का दोहन करना दोष के लिये अत्यन्त आवश्यक है। सातवी योजना में पर्यटन को एक उद्योग का दर्जा दिये जाने की बात कही गयी थी। उस समय से आजतक पर्यटन को विदेशी मुद्रा प्राप्ति का एक महत्वपूर्ण स्रोत माना जाता है इसकी वित्तीय व्यवस्था भी एक उद्योग की भाति ही की जाती है। इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए ही पर्यटन एवं इससे जुड़े अन्य उद्यमों एवं सेवाओं में भी निवेश किया जाता है जिससे कि इच्छित आय की प्राप्ति हो सके। इस संदर्भ में एक अन्य तथ्य भी विचारणीय है। यदि पर्यटन को एक उद्यम का दर्जा दिया जाता है तो इससे लाभ की प्राप्तियाँ भी दीर्घकालीन एवं उद्यमों पर किये जाने वाले निवेश के समकक्ष होनी चाहिए। यही कारण है कि पर्यटन एवं पर्यावरण के मध्य अत्यन्त सटीक सन्तुलन बनाये रखने की आवश्यकता है। यदि पर्यावरण का ध्यान न रखते हुए पर्यटन पर अत्यधिक निवेश किया जाता है तो पर्यावरण का विनाश निश्चित है। और यदि पर्यावरण का विनाश होता है तो पर्यटन घटने के साथ ही इस उद्यम से जुड़े सभी क्षेत्रों निवेश का डूबना निश्चित है। यही कारण है कि पर्यटन एवं पर्यावरण को एक दूसरे का पर्याय माना जाता है। इन दोनों क्षेत्रों में सटीक समन्वय ही विकास की कुंजी है।

उत्तराखण्ड के पर्यटन के बारे में कहा जाता है कि उत्तराखण्ड में पर्यटन की इतनी अपार सम्भावनाएं है कि यह स्विट्जरलैंड को भी पीछे छोड़ सकता है इसके अनेक कारण है प्रथमतः यहाँ का नैसर्गिक सौन्दर्य अद्वितीय है, द्वितीयतः यहाँ का प्रदूषण मुक्त वातावरण अनायास ही पर्यटकों का मन मोह लेता है। यहाँ के पर्यटन के लिये कहा जाता है कि यह हर वर्ग के पर्यटकों एवं हर प्रकार के पर्यटन के लिये उपयुक्त है। यदि धार्मिक पर्यटन को देखा जाये तो यहाँ न केवल भारत के चार धामों में से एक धाम श्री बद्री—केदार यहाँ विराजमान है वरन् यमुनोत्री, गंगोत्री, बागेश्वर, हरिद्वार जैसे अनगित क्षेत्र यहाँ उपलब्ध है। यदि किसी पर्यटक की साहसिक पर्यटन में रूचि है तो व्यासी के राफटिंग, औली के स्कीइंग, नामिक ग्लेशियर, वासुकीताल, माणा पास इत्यादि के ट्रेकिंग जैसे अनगिनत सुरक्षित एवं सुरम्य स्थल उपलब्ध है। विश्व का आकर्षण केन्द्र फूलों की घाटी के जैसी अद्वितीय प्राकृतिक सुन्दरता केवल उत्तराखंड में ही है । यहाँ कि वादियां हमेशा से ही पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र बिन्दू रही है। इसी आसीम सौन्दर्य के कारण ब्रिटिश हुकूमत ने मसूरी और नैनीताल को पर्यटन स्थलों के रूप में विकसित किया गया । वहीं भारतीय समाज में उत्तराखण्ड को देवभूमि माना गया है । यहां के प्रसिद्ध चार धाम गंगोत्री, यमनोत्री, बद्रीनाथ, और केदारनाथ की यात्रा करना हर भारतीय की अभिलाषा रही है । उत्तराखण्ड अपने नैसर्गिक सौन्दर्य के कारण प्रतिवर्ष

लाखों देशी एवं विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करता रहा है। बीते कुछ वर्षों में इनकी संख्या में लगातार वृद्धि हुई है। वर्ष २०१५ में उत्तराखण्ड आने वाले विदेशी पर्यटकों की संख्या १११०९४ लाख थी, जबकि वर्ष २०१६ में यह आंकड़ा ११२७९९ लाख रहा है, जबकि २०१७ में यह संख्या १४२१०२ लाख रही है। वहीं देशी पर्यटकों की उत्तराखण्ड में दृष्टि डालें तो यह संख्या वर्ष २०१६ में ३१६६३७८२, वर्ष २०१७ में ३४८१०९७ लाख देशी पर्यटकों ने उत्तराखण्ड की ओर रूख किया है। कहने का तात्पर्य यह है कि उत्तराखण्ड राज्य में हर प्रकार के, हर वर्ग के एवं हर मौसम के पर्यटकों के आकर्षण के लिये कुछ न कुछ अवश्य ही उपलब्ध है और हमें मात्र यह सुनिश्चित करनी है कि हम इस अवसर एवं प्राकृतिक सम्पदा को धरोहर को उत्तराखण्ड के हित में किस प्रकार एवं कितना प्रयोग कर सकते हैं। यहाँ की सांस्कृतिक विरासत एवं नैसर्गिक सुन्दरता ही पर्यटकों की रूचि का केन्द्र है जो अपने आप में ही पर्यटकों को आकर्षण करने में सक्षम है।

गांधी जी की धारणा थी कि विकास योजनाओं के निर्माण में इस प्रकार की व्यवस्था होनी चाहिए कि उसमे स्थानीय एवं ग्रामीण व्यक्तियों की भी सहभागिता हो। विकास कार्यक्रम ऐसे होने चाहिए कि जिससे समग्र समाज लाभान्वित हो। इससे समाज के व्यक्तियों में दायित्व का बोध होगा एवं सतत विकास की प्रक्रिया को बल मिलेगा। मूलधारणा यह है कि गांधी जी का विकास माडल मानव कल्याण को विकास का मानदण्ड मानता है। यही गांधी जी का विकास माडल एक ऐसा विकल्प है जो उत्तराखण्ड की अर्थव्यवस्था को पुनः पलायन, निर्धनता एवं बेरोजगारी जैसी गम्भीर समस्याओं से मुक्ति दिला सकता है। पर्यटन एक ऐसा क्षेत्र है जिसके विकास से न केवल स्थानीय निवासियों की सहभागिता सुनिश्चित होगी वरन् इस क्षेत्र की आय का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्रोत होगा। यही इस क्षेत्र के लिये सुदृढ़ एवं दीर्घकालीन विकास की अवधारणा है।

पर्यावरण के दृष्टिकोण से भी जन सहभागिता पर्यटन के विकास के लिये आवश्यक है। यदि स्थानीय समुदाय को यह समझ आ जाये कि पर्यटन उनकी आय का एक महत्वपूर्ण स्रोत है और इस पर्यटन का आधार पर्यावरण एवं वनों व पारिस्थितिकीय सन्तुलन पर निर्भर करता है तो सम्भवतः उनकी पर्यावरण संरक्षण में सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित हो सकेगी। जैसा कि सर्वविदित है कि बिना जनसहभागिता के पर्यावरण एवं वनों का संरक्षण सम्भव ही नहीं है। वनविभाग एवं स्थानीय नागरिकों के संयुक्त प्रयास से इनका सर्वोत्तम प्रबन्धन सम्भव है। दूसरी ओर आज का युवा कृषि को अपनी आजीविका का एकमात्र स्रोत नहीं बनाना चाहता। उसकी रूचि विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार की सम्भावनाओं को खोजने में सतत् प्रयासरत् है। इस दृष्टि से भी पर्यटन का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। पर्यटन से जुड़े अनेक क्षेत्र हैं। जैसे कि परिवहन, होटल व्यवसाय, खान--पान व्यवसाय, गाईड इत्यादि अनेक अनगिनत क्षेत्र हैं जिसमे आज का युवा अपने भविष्य के लिये व्यवसाय का चुनाव कर सकता है। इसके अतिरिक्त उत्तराखण्ड के पर्यटन एवं पर्यावरण को केवल उत्तराखण्ड के क्षेत्र से सम्बन्धित नहीं मानना चाहिए। यह एक अत्यन्त संकीर्ण दृष्टिकोण है। उत्तराखण्ड का पर्यावरण न केवल सम्पूर्ण उत्तर भारत की जलवायु को प्रभावित करता है वरन् इस क्षेत्र से निकलने वाली महत्वपूर्ण नदियाँ मैदानी क्षेत्र का एक मात्र जल संसाधन है, कृषि उत्पादन का आधार है और इस क्षेत्र के मैदानी निवासियों की आजीविका का अत्यन्त महत्वपूर्ण कारक है। यदि किसी कारणवंश यहाँ का पारिस्थितिकीय सन्तुलन बिगड़ता है तो इस सम्पूर्ण क्षेत्र का कितनी बुरी तरह प्रभवित कर सकता है इसका केवल अनुमान लगाया जा सकता है।

एक अन्य महत्वपूर्ण कारक जो इस क्षेत्र को भारतवर्ष और सम्भवतः पूरे विश्व के किसी भी पर्यटक स्थल की तुलना में वरीयता प्रदान करता है वह है यहाँ पर पर्यटन पर आने वाला व्यय है। किसी भी अन्य क्षेत्र की तुलना में उत्तराखण्ड में पर्यटक अन्यन्त कम व्यय करके ही प्रकृति का आनन्द ले सकता है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं है कि मैदानी क्षेत्रों की तपती लू वाले वातावरण के स्थान पर यहाँ पर

लगभग सभी पर्यटन क्षेत्र ही पूरे के पूरे ठंडे और वातानुकूलित हैं। ये स्थल जो आत्मिक शान्ति एवं राहत प्रदान कर सकते है वह कहीं और सम्भव नहीं है। यहाँ पर पर्यटन पर आने वाला व्यय किसी भी अन्य देश की तुलना में अत्यन्त कम है । एक अनुमान है कि यदि स्विटजरलैण्ड एवं भारत में पर्यटन सम्बन्धित समान सेवाओं पर आने वाले व्यय की तुलना की जाये तो यहाँ मात्र १० प्रतिशत लागत में ही वे सभी सुविधाएँ मिल सकती है जो स्विटजर लैण्ड में मिलती है । यहाँ पर होटल, परिवहन, खानपान इत्यादि की सुविधाएं अत्यन्त कम कीमतों पर उपलब्ध है।

लेकिन विचारणीय विषय यह है कि 'अतिथि देवो भव' की भावना रखने वाले इस देश की विश्वपर्यटन में मात्र ०.४ प्रतिशत ही हिस्सेदारी क्यों है? इसका कारण है उन सभी सुविधाओं एवं व्यवस्थाओं की कमी जिनकी एक विदेशी पर्यटक सामान्यत: अपेक्षा करता है। आज के इस उथल-- पुथल के समय में विश्व के सभी पर्यटक अपनी एवं अपने परिवार की जीवन की सुरक्षा के प्रति सर्वाधिक चिन्तित है। वे किसी ऐसे स्थान पर नहीं जाना चाहते जहाँ पर उनके एवं उनके परिवार की सुरक्षा के प्रति लेशमात्र भी संशय हो। इसके साथ ही सभी मौसमों के अनुकूल आवागमन के सुगम साधन, स्तरीय आवास एवं खानपान की सुविधाएं, संपर्क सुविधाएं एवं किसी आपदा के समय आपदानिवारण के उपाय इत्यादि ऐसे तत्व है जो पर्यटन को अत्यधिक प्रभावित करते है। इनमें से केवल प्रथम कारक-- सुरक्षा की दृष्टि से उत्तराखण्ड अत्यन्त सुरक्षित पर्यटक स्थल है। यहाँ के निवासियों के शान्ति एवं प्रेम युक्त व्यवहार जगप्रसिद्ध ही है। यहाँ आज तक कोई ऐसी घटना नहीं हुई जिससे यह लगता हो कि यहाँ पर शान्ति एवं सुरक्षा का वातावरण नहीं है। लेकिन यह भी सत्य है कि उपरोक्त अन्य सभी कारकों में उत्तराखण्ड एक अत्यन्त अविकसित अवस्था में है। कारण स्पष्ट है-- अतीत में सरकारों ने पर्यटन को व्यवहार में एक उद्यम नहीं माना केवल सैद्धान्तिक रूप में ही इसे उद्यम का दर्जा दिया गया। पर्यटकों के आवागमन की सुविधा के लिये लगभग पिछले कई वर्षों से कर्णप्रयाग तक रेलवे लाइन बिछाने की योजना चल रही है। सभी नवीन सरकारें इस दिशा में तेजी लाने के प्रयास की बातें करती है लेकिन यह अभी तक केवल कागजों में ही सिमटी रह जाने वाली योजना बन कर रह गयी है। उत्तराखण्ड के मार्ग अभी तक केवल ग्रीष्म ऋतु में ही आवागमन के योग्य है, मानसूनी बरसात एवं सर्दियों में आने जाने के योग्य नहीं रह पाते। किसी भी समय ये बन्द हो जाते है। सैकड़ों बार मार्ग अवरूद्ध हो जाने के कारण से आये दिन हजारों यात्री उत्तराखण्ड में फँस जाते है जिससे उन्हें अत्यधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। आवास के क्षेत्र का ही अवलोकन करें तो यहाँ पर उपलब्ध आवास उन सभी सुखसुविधाओं से युक्त नहीं है जिनका कि आने वाले पर्यटक अभ्यस्त होते है। इसके अतिरिक्त, समुचित संख्या में आवास न होने के कारण यात्रा के समय में पर्यटकों को आवास मिल ही नही पाते जिससे आने वाले पर्यटक एक गलत छवि लेकर वापस जाते है जिससे उनके सम्पर्क में आने वाले अन्य पर्यटक भी उत्तराखण्ड आने से हतोत्साहित होते हैं। संक्षेप में कहा जाये तो यहाँ के उद्यमियों एवं सरकारों ने इस दिशा मे अत्यन्त कम निवेश किया है जिसके कारण यहाँ पर पर्यटकों को प्रोत्साहन कम एवं निराशा ही अधिक हाथ लगती है।

स्पष्टत: उत्तराखण्ड में पर्यटन की अपार सम्भावनाएं है लेकिन इसके लिये आवश्यक यह है कि न केवल पर्यटन के विकास पर व्यय किया जाये वरन् पर्यावरण सुरक्षा पर भी व्यय किया जाये ताकि पर्यटन एवं पर्यावरण में असन्तुलित विकास होने से बचा जा सके। उत्तराखण्ड का पर्यटन यहाँ के पर्यावरण पर आधारित है और पर्यावरण स्वयं संयमित पर्यटन की गतिविधियों पर निर्भर करता है। पर्यावरण के विनाश को बचाने के लिये पर्यटन के लिये एक संयमित एवं सुरक्षित प्रयास किया जाना आवश्यक है। अभी हाल ही में खबर आयी थी कि चार धाम यात्रा के लिये मार्गों के चौड़ी करण के लिये एन.एच. ९ के निर्माण में संलग्न संस्था नेशनल हाईवे अथॉरिटी पर पर्यावरण संरक्षा के लिये आवश्यक मानकों की

अवहेलना करने पर, वनस्पतियों, वृक्षों को नुकसान एवं जीवजन्तुओं की प्राकृति आवास को नष्ट करने के लिये नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल द्वारा १२ लाख रूपये का जुर्माना लगाया है। सड़कों के विस्तारीकरण, आवासीय होटल इत्यादि के निर्माण एवं अन्य अवस्थापनाओं की स्थापना करने पर निश्चित रूप से नुकसान एवं कटान करना ही पड़ेगा। पर्यटन के अनियमित विकास का एक दूसरा पक्ष भी है। पर्यटन अनेक प्रकार के अवशिष्ट को जन्म देता है जो इस क्षेत्र का पारिस्थितिकीय सन्तुलन को बिगाड़ सकता है। मानवीय खान–पान अवशिष्ट, जैविक–अजैविक अवशिष्ट, वाहनों के आवागमन फैलने वाला धुआं एवं प्रदूषण ऐसे खतरे है जो हमारी इस धरोहर को सदैव के लिये ही नष्ट कर सकते हैं। अभी हाल में ही गंगोत्री एवं यमनोत्री क्षेत्र से कई लाख टन प्लास्टिक का कचरा एकत्र किया गया। पर्यटन के बढ़ने से न केवल विकसित क्षेत्र अपितु अविकसित क्षेत्र जहाँ जंगल में मौजमस्ती के लिए पर्यटक अन्दर तक चले जाते है और अपने साथ लाये प्लास्टिक कैरी बैग, पानी की बोतल आदि का कचरा वहीं छोड़ देते है, जो कि पर्यावरण के लिए घातक सिद्ध हो रहा है। जिससे पानी के स्रोत, नदी नाले जल रहित हो रहे हैं, साथ ही पहाड़ों में पाई जाने वाली दुर्लभ प्रजाति की वनस्पति भी विलुप्त हो रही है। इससे एक ऐसी चक्रीय प्रक्रिया उत्पन्न हो सकती है जिससे पर्यटकों के कारण प्रदूषण एवं प्रदूषण के कारण पर्यावरण तथा पर्यावरण खराब होने पर पर्यटकों का आवागमन एवं अन्ततः यहाँ की अर्थव्यवस्था प्रभावित हो सकती है।

अतः पर्यटन में इस प्रकार निवेश किया जाना आवश्यक है जिससे पर्यावरण प्रभावित न हो। उदाहरण के लिये गाड़ियों के धुएं एवं प्रदूषण को कम करने के लिए रोपवे का अधिकाधिक प्रयोग किया जा सकता है। जहाँ तक सम्भव हो रेलवे लाइनें बिछाई जा सकती है। इसके अतिरिक्त सार्वजनिक प्रदूषण विहीन आवागमन के साधनों को बढ़ावा दिया जा सकता है। ऐसा नहीं है कि यह तकनीकी रूप से असम्भव है अनेक देशों में पर्यटन के लिये लम्बे लम्बे रोपवे लगाये गये है। अत्यधिक ऊँचे एवं बर्फीले स्थानों पर रेलवे लाइने बिछाना विदेशों में एक साधारण सा कार्य है। पड़ौसी देश चीन ने भी अभी हाल ही में अगम्य माने जाने वाले एवं दुरूह भौगोलिक संरचना वाले क्षेत्र में ल्हासा तक रेल चला कर कीर्तिमान स्थापित किया है। इसके अतिरिक्त अपशिष्ट प्रबन्धन की आधुनिक वैज्ञानिक तकनीकों का प्रयोग किया जा सकता है। पुनः चक्रीय करण से आसानी से ही अपशिष्ट का सुरक्षित निस्तारण किया जा सकता है। लेकिन ऐसा करने के लिये बड़े पैमाने पर पर्यटन सम्बन्धित अवस्थापना में निवेश किये जाने की आवश्यकता होगी। यह भी सर्वविदित तथ्य है कि अवस्थापना में किये जाने वाले निवेश की परिपक्वता अवधि अधिक होती है लेकिन यह भी सत्य है कि ऐसे निवेश से दूरगामी एवं आशान्वित लाभ प्राप्त होते है। ऐसी अवस्थापना में निवेश की मात्रा अत्यधिक होने, लाभ की दर कम होने एवं दीर्घ अवधि के पश्चात लाभार्जन के कारण सामान्यतः निजि क्षेत्र के उद्यमियों के द्वारा निवेश नहीं किया जाता। ऐसे में सरकार द्वारा ही बड़े पैमाने पर निवेश करके अथवा निवेश में निजी–सार्वजनिक सहभागिता के द्वारा निवेश की राशि को जुटाया जा सकता है ताकि पर्यावरण को क्षति न पहुँचे एवं पर्यटन को भी बढ़ावा मिल सके।

अन्ततः उत्तराखण्ड की अर्थव्यवस्था पर्यटन एवं पर्यावरण दोनो ही दृष्टि से अत्यन्त संवेदनशील है एवं इन दोनो में सन्तुलित विकास की प्रक्रिया का मॉडल अपना कर ही इच्छित परिणाम प्राप्त किये जा सकते है। इन दोनो का सन्तुलित विकास एक महत्वाकांक्षी एवं साहसिक लक्ष्य है जिसे बड़े पैमाने के निवेश से प्राप्त किया जा सकता है। यह तभी सम्भव है जब पर्यटन एवं पर्यावरण को एक समग्र लक्ष्य माने एवं इन दोनो में समन्वय स्थापित करते हुए निवेश किया जाये।

संदर्भ —

डॉ० हरिमोहन उत्तरांचल में पर्यटन नए क्षितिज तक्षशिला प्रकाशन दरियागंज नई दिल्ली ।

१— बिष्ट हर्षवन्ती टूरिज्यम इन गढ़वाल हिमालय इण्डिया पब्लिकेशन क० नई दिल्ली।

२— डबराल एस० पी० उत्तराखण्ड यात्रादर्शन वीरगाथा प्रकाशन दुगड्डा कोटद्वार।

३— दैनिक समाचार पत्र अमर उजाला, दैनिक जागरण विभिन्न तिथियों से सम्बंधित।

४— उत्तराखण्ड पर्यटन विकास परिषद उत्तराखण्ड (साहित्यकीय डायरियों में संकलित)।

५ — www.tourism.gov.in

६— www.uttaranchaltourism.net